संचार

विद्यार्थियों की कलम से...

तिथि– मार्गशीर्ष पौष/शुक्ल पक्ष/एकादशी/संवत 2082/युगाब्द 5126, दिसंबर 2025

J.C. BOSE UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY, YMCA FARIDABAD HARYANA विद्या परम् भूषणम्

READY FOREVER

कौशल और नवाचार का संगम बनी मीडिया पोर्टफोलियो प्रदर्शनी-2025

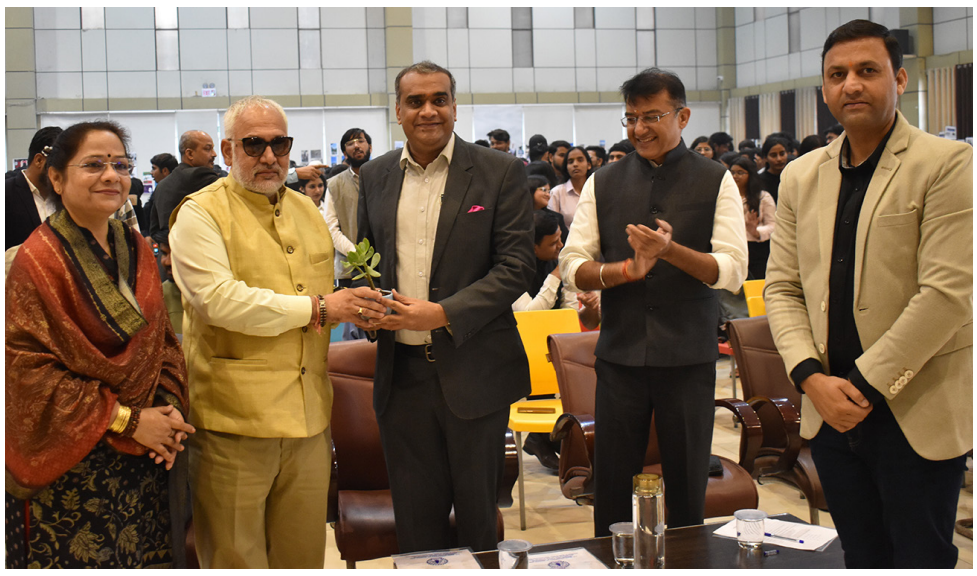

फरीदाबाद। *जे.सी.बोस विश्वविद्यालय वाईएमसीए के संचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी विभाग ने मीडिया पोर्टफोलियो प्रदर्शनी–2025 का आयोजन किया। मीडिया, सोशल वर्क व विजुअल कम्युनिकेशन के स्नातक व स्नातकोत्तर के अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों ने अपने अध्ययन के दौरान की रचनात्मक एवं प्रयोगात्मक गतिविधियों को डॉक्यूमेंटेशन, ऑडियो और वीडियो के रूप में प्रदर्शित किया।*

शाकुंतलम में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एनडीटीवी के प्रबंध संपादक अखिलेश शर्मा और विशिष्ट अतिथि हरियाणा मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार एवं भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी राजीव जेटली ने दीप प्रज्वलित कर प्रदर्शनी का विधिवत उद्घाटन किया।

पत्रकारिता के पवित्र पेशे में तथ्यों से खिलवाड़ संभव नहीं

एनडीटीवी के प्रबधक संपादक अखिलेश शर्मा ने कहा कि पत्रकारिता एक पवित्र पेशा है, जिसमें तथ्यों के साथ कोई खिलवाड़ नहीं किया जा सकता। एआई आज भले ही एक क्रांति लग रहा हो, लेकिन जल्द ही यह सिर्फ एक अन्य साधारण टूल बनकर रह जाएगा। उन्होंने निरंतर सीखने पर जोर दिया और कहा कि, विद्यार्थियों को नई तकनीकों पर आधारित कार्यशालाओं में नियमित रूप से भाग लेकर समय के साथ स्वयं को अपडेट करते रहना चाहिए। उन्होंने पोर्टफोलियो प्रदर्शनी की सराहना की।

एआई मानवीय रचनात्मकता और गहन सोच का विकल्प नहीं

राजीव जेटली ने अपने संबोधन में कहा कि एआई एक शक्तिशाली उपकरण है, जो हमारे काम को आसान बना सकता है, लेकिन यह मानवीय रचनात्मकता और गहन सोच का विकल्प नहीं बन सकता। उन्होंने पोर्टफोलियो प्रदर्शनी की सराहना करते हुऐ कहा कि यह प्रदर्शनी इस बात का प्रमाण है कि विद्यार्थी केवल सैद्धांतिक रूप से नहीं, बल्कि व्यावहारिक रूप से उद्योग की चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

> मीडिया पोर्टफोलियो प्रदर्शनी–2025 विद्यार्थियों के लिए एक उत्कृष्ट कार्यों का समर्पित उत्सव है। जो मीडिया क्षेत्र में उनके भविष्य के प्रयासों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है।
>
> ***प्रो. राजीव कुमार***
> कुलगुरु, जेसी बोस विश्वविद्यालय, फरीदाबाद

> मीडिया, विजुअल कम्युनिकेशन व सोशल वर्क के अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों ने रचनात्मकता, स्किल और विविध प्रतिभाओं को प्रदर्शित किया। विद्यार्थियों का पोर्टफोलियो उद्योग की वर्तमान मांगों को पूरा करने की क्षमता का एक सशक्त प्रमाण है।
>
> ***प्रो. पवन सिंह***
> विभागाध्यक्ष, जेसी बोस विश्वविद्यालय, फरीदाबाद

प्रदर्शनी में दिल्ली एनसीआर के विभिन्न संस्थानों, विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और स्कूलों के 2,000 से अधिक विद्यार्थियों ने अवलोकन किया। यह आयोजन मीडिया कलाओं का एक जीवंत उत्सव रहा, जिसमें उपस्थित लोगों को विद्यार्थियों की प्रतिभा और रचनात्मकता ने आश्चर्यचकित कर दिया।

रचनात्मकता की चमक: मिला बेस्ट पोर्टफोलियो अवॉर्ड

प्रदर्शनी में बीएजेएमसी, एमएजेएमसी, बीएससी विजुअल कम्युनिकेशन, बीएसडब्ल्यू एवं एमएसडब्ल्यू के 125 प्रतिभागियों ने अपनी कृतियों एवं उपलब्धियों को ऑडियो व वीडियो के माध्यम से प्रदर्शित किया।

सर्वश्रेष्ठ पोर्टफोलियो की श्रेणी में अंशिका गुप्ता, बीएससी, विजुअल कम्युनिकेशन, भूमि, बीएसडब्लयू, मानसी, बीएजेएमसी, यश नेगी, बीएजेएमसी, आस्था, एमएजेएमसी, फिओना, एमएसडब्ल्यू को सम्मानित किया गया।

मीडिया पोर्टफोलियो प्रदर्शनी–2025 में इस बार विभाग के तीन क्लब संचार, युवा फॉर सेवा और दृश्य क्लब की आकर्षक रंगोली और इन क्लब की गतिविधियों को दर्शाती विशेष स्टॉल विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं।

> जब मुझे 'बेस्ट पोर्टफोलियो' का अवॉर्ड मिला, तो सबसे पहले मुझे अपनी टीम और शिक्षकों की याद आई, जिन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया। इस प्रक्रिया ने मुझे डिजाइनिंग और प्रस्तुति को नए दृष्टिकोण से समझना सिखाया। यह सम्मान मेरे लिए एक नए सफर की शुरुआत है।
>
> ***फिओना, एमएसडब्ल्यू***

> मेरे लिए यह अवॉर्ड सिर्फ एक ट्रॉफी नहीं, बल्कि मेरी सीख, संघर्ष और समर्पण का प्रतीक है। पूरी तैयारी के दौरान मैंने हर दिन खुद को बेहतर बनाने की कोशिश की। जूरी द्वारा मेरी मेहनत को सराहा जाना बहुत खुशी देता है।
>
> ***आस्था, एमएजेएमसी***

> बेस्ट पोर्टफोलियो अवॉर्ड पाना मेरे लिए एक उम्मीद से बढ़कर अनुभव है। जब मैंने अपना काम तैयार किया था, तभी तय कर लिया था कि इसमें मेरी सोच, मेरी पहचान साफ दिखनी चाहिए।
>
> ***भूमि, बीएसडब्ल्यू***

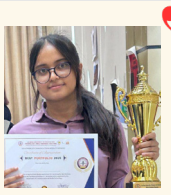

> बेस्ट पोर्टफोलियो अवॉर्ड मिलना मेरे लिए बेहद गर्व का क्षण है। इस काम में मैंने अपनी कल्पनाशक्ति और मेहनत पूरी लगाई थी। जब मेरा नाम अनाउंस हुआ, तो लगा कि मेरी कोशिशें सफल हुईं। मैं अपने शिक्षकों की आभारी हूँ।
>
> ***अंशिका, बीसीएमटी***

> यह अवॉर्ड पाकर मेरा आत्मविश्वास कई गुना बढ़ गया है। शुरू में मुझे यकीन नहीं था कि मैं इतनी मजबूत प्रतिस्पर्धा में आगे निकल पाऊँगी, लेकिन लगातार मेहनत और सही मार्गदर्शन ने मुझे यहाँ तक पहुँचाया।
>
> ***मानसी, बीएजेएमसी***

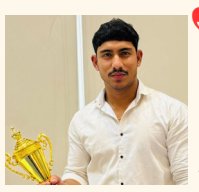

> इस अवॉर्ड ने साबित किया कि मजबूत अवधारणा व साफ विजन हमेशा अलग दिखाई देते हैं। मैंने अपने पोर्टफोलियो में अनावश्यक चीजों से ज्यादा विचार की स्पष्टता पर काम किया था। जूरी का सम्मान मेरे लिए संकेत है कि मेहनत को दिशा मिल जाए, तो परिणाम खुद सामने आते हैं।
>
> ***यश, बीएजेएमसी***

मीडिया विभाग में वंदे मातरम् की150वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में विशेष आयोजन

फरीदाबाद। जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया प्रौद्योगि. की विभाग के बीएसडब्ल्यू तथा एमएसडब्ल्यू के विद्यार्थियों ने संविधान दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। इस वर्ष यह आयोजन राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ को समर्पित था। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने कुलगुरु प्रो. राजीव कुमार को राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम पर आधारित एक विशेष फ्रेम भेंट किया। इस अवसर पर सुप्रीम कोर्ट, दिल्ली के अधिवक्ता पांचजन्य विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में भारतीय संविधान के मूल्यों, इसकी प्रासंगिकता व वर्तमान सामाजिक – राजनीतिक परिस्थितियों में इसके महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने युवाओं को संवैधानिक सिद्धांतों के प्रति जागरूक रहने और सामाजिक दायित्वों को निभाने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के एक अन्य विशिष्ट अतिथि प्रखर ने भारत की चित्त और आत्मा विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि देश की दार्शनिक परंपराओं और संविधान में निहित लचीलापन राष्ट्र के समग्र विकास और स्थिरता के लिए आधार प्रदान करता है।

विभागाध्यक्ष प्रो. पवन सिंह ने राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को संवैधानिक कर्तव्यों के प्रति सजग रहने और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने का संदेश दिया।

कार्यक्रम के समापन पर सभी उपस्थित व्यक्तियों ने भारतीय संविधान के प्रति निष्ठा व्यक्त करते हुए शपथ ग्रहण की।

संविधान दिवस पर नवगठित छात्र परिषद ने ली शपथ

फरीदाबाद। संविधान दिवस के उपलक्ष्य में जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए फरीदाबाद में सत्र 2025–26 के लिए नवगठित विश्वविद्यालय छात्र परिषद का पद–ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। यह आयोजन छात्र कल्याण अधिष्ठाता कार्यालय द्वारा किया गया।

समारोह में छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. प्रदीप डिमरी ने नवनियुक्त पदाधिकारियों को जिम्मेदारी व कर्तव्यपरायणता की शपथ दिलाई। उन्होंने छात्र नेतृत्व की भूमिका और परिषद के माध्यम से विश्वविद्यालय के समग्र विकास में छात्रों के योगदान पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में संस्थान अधिष्ठाता प्रो. मुनीश वशिष्ठ, सूचना प्रौद्योगिकी एवं कम्प्यूटिंग संकाय अधिष्ठाता प्रो. मनजीत सिंह और डॉ. दीपांश शर्मा भी उपस्थित रहे।

अपने संबोधन में प्रो. मुनीश वशिष्ठ ने परिषद सदस्यों को अनुशासन, उत्तरदायित्व, नेतृत्व और निःस्वार्थ सेवा के मूल्यों को बनाए रखते हुए छात्र सशक्तिकरण तथा विश्वविद्यालय की प्रगति के लिए सक्रिय रूप से काम करने का आह्वान किया। नवनियुक्त सदस्यों ने सभी छात्र गतिविधियों को रचनात्मक, समावेशी और प्रभावी बनाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। सत्र 2025–26 के लिए छात्र परिषद में नितेश नागर अध्यक्ष, परम उपाध्यक्ष, अंचल तिवारी सचिव, कुणाल कुमार संयुक्त सचिव तथा अमन, सोनम, अमन और शिवम मिश्रा कार्यकारी सदस्य नियुक्त किए गए हैं।

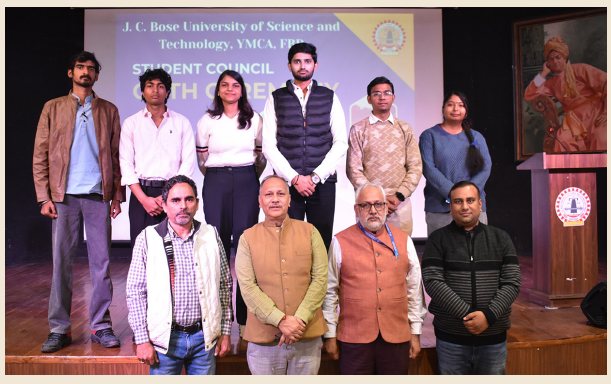

मानवीय रचनात्मकता को प्राथमिकता देते हुए एआई का शिक्षण में उपयोग

फरीदाबाद। जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद के कुलगुरु प्रो. राजीव कुमार ने नई दिल्ली के यशोभूमि इंडिया इंटरनेशनल कन्वेंशन एंड एक्जीबिशन सेंटर में आयोजित 15वें अंतरराष्ट्रीय शिक्षा एवं कौशल शिखर सम्मेलन (टीआईएसएस–2025) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस आयोजन के सत्र "स्थायी शिक्षा पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति एवं मूल्यांकन" में पैनल चर्चा के दौरान उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के शिक्षा क्षेत्र में उभरते प्रभाव पर अपने विचार रखे।

प्रो. राजीव कुमार ने इस बात पर बल दिया कि तकनीकी प्रगति के इस दौर में मानवीय मौलिकता और रचनात्मक क्षमता को संरक्षित रखना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यद्यपि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस शिक्षा प्रक्रिया को सरल और प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है, फिर भी इसके उपयोग को इस प्रकार सुनिश्चित करना होगा कि यह मानवीय सोच और नवाचार के मूल गुणों को कमजोर न करें। शिक्षकों को अपनी शिक्षण विधियों में निरंतर नवीनता लाने की आवश्यकता है। कुलगुरु ने यह भी सुझाव

दिया कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नैतिक और जिम्मेदार उपयोग को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।

नीति– निर्माताओं को शिक्षकों के लिए व्यापक प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि इस तकनीक के सकारात्मक और संभावित जोखिमों के बारे में जानकारी प्रारंभिक शिक्षा स्तर, यहां तक कि प्री–स्कूल चरण से ही दी जानी चाहिए। साथ ही, अभिभावकों को भी इस तकनीक के उपयोग और उसके प्रभावों से परिचित कराना आवश्यक है, ताकि वे अपने बच्चों के लिए सही दिशा–निर्देश प्रदान कर सकें।

सम्मेलन के दौरान विश्वविद्यालय के प्रदर्शनी स्टॉल का भी दौरा करते हुए प्रो. राजीव कुमार ने संकाय सदस्यों को नवीनतम शैक्षिक प्रौद्योगिकियों और कौशल विकास से संबंधित वैश्विक प्रथाओं का गहन अध्ययन करने का निर्देश दिया। उन्होंने जोर दिया कि प्रदर्शनी में प्रस्तुत नवाचारों को विश्वविद्यालय की शिक्षण प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालय ने इस आयोजन में कौशल विकास और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धियों को प्रदर्शित किया, जिसका संचालन डीन (इंस्टिट्यूट) प्रो. मुनीश वशिष्ठ और कम्युनिटी कॉलेज ऑफ स्किल डेवलपमेंट के प्रिंसिपल प्रो. संजीव गोयल के नेतृत्व में किया गया।

टीआईएसएस–2025 में विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों और छात्रों की एक टीम भी सक्रिय रूप से भाग ले रही है, शिक्षा प्रौद्योगिकी व कौशल विकास के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अपनाई जा रही उभरते रुझानों का अवलोकन कर रही है।

एनईपी–2020 को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए किया गया प्रेरित

फरीदाबाद। संबद्ध कॉलेजों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रावधानों को प्रभावी ढंग से लागू करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

जे. सी. बोस विश्वविद्यालय फरीदाबाद के कुलगुरु प्रो. राजीव कुमार ने संबद्ध कॉलेजों के निदेशकों व प्रधानाचार्यों के साथ आयोजित बैठक में इस दिशा में ठोस कदम उठाने का आह्वान किया। कुलगुरु ने संबद्ध कॉलेजों से विश्वविद्यालय की

नीति निर्माण प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने और अपने सुझाव प्रस्तुत करने का अनुरोध किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत सहभागी शासन को मजबूत करने के लिए सभी संबद्ध संस्थानों का सहयोग आवश्यक है।

इस बैठक में परीक्षा प्रक्रिया, पाठ्यक्रम की समीक्षा और परिणामों की समयबद्ध घोषणा से संबंधित मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की गई।

हंगरी दूतावास की सचिव ने किया विश्वविद्यालय का दौरा

हंगरी की डायना डैक्जी को स्मृति चिन्ह देते कुलगुरु प्रो राजीव कुमार

फरीदाबाद। जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय व हंगरी के प्रमुख विश्वविद्यालयों के बीच शैक्षणिक साझेदारी को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। नई दिल्ली स्थित हंगरी दूतावास की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रथम सचिव डायना डैक्जी के विश्वविद्यालय दौरे के दौरान दोनों पक्षों ने अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, कार्यशालाओं और शोध सहयोग को बढ़ावा देने पर सहमति जताई। बैठक की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. राजीव कुमार ने की। यह बैठक विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय मामलों के प्रकोष्ठ और कम्युनिटी कॉलेज ऑफ स्किल डेवलपमेंट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई।

एआईसीटीई–वाणी कार्यशाला संपन्न

फरीदाबाद। जे.सी.बोस विश्वविद्यालय के कंप्यूटर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा आयोजित एआईसीटीई– वाणी प्रायोजित राष्ट्रीय कार्यशाला "स्मार्ट शहरों एवं बुद्धिमान गतिशीलता में तकनीकी नवाचार" का सफलतापूर्वक समापन हो गया।

समापन समारोह में डॉ. शिव कुमार,महानिदेशक,आईटीडी–इंडिया मुख्य अतिथि रहे, जबकि डॉ. अतुल राय,सीनियर जनरल मैनेजर, आईटीएस इंडिया फोरम विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रो. मंजीत सिंह, डीन फैकल्टी ऑफ इन्फॉर्मेटिक्स एंड कंप्यूटिंग प्रो. आशुतोष दीक्षित, विभागाध्यक्ष कंप्यूटर इंजी. नियरिंगय उपस्थित रहे।

परीक्षा केवल मूल्यांकन नहीं, आत्म-निर्माण का साधन

हर प्रश्न को ध्यान से देखो और लिख दो उत्तर, इतिहास लिखने की पहली आदत यहीं से शुरू होती है: कुलगुरु

इतिहास गवाह है कि कई बार, कमजोर तैयारी वाले दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ने भयभीत व विचलित प्रतिभाशाली व्यक्ति से बेहतर प्रदर्शन किया है। क्यों? क्योंकि उन्होंने दबाव को चुनौती के रूप में देखा, न कि असंभव बोझ के रूप में। यह आवश्यक है कि आप अपनी मानसिक और शारीरिक ऊर्जा का संतुलन बनाए रखें।

विश्वविद्यालय परिसर में शैक्षणिक सत्र की परीक्षाओं का शंखनाद हो चुका है। लेकिन याद रहे यह मात्र एक अंक अर्जित करने की प्रक्रिया नहीं है, यह आपके शैक्षणिक संकल्प, मानसिक दृढ़ता और चरित्र–निर्माण की वह कसौटी है, जिसके परिणाम आपके भावी जीवन की दिशा निर्धारित करेंगे। परीक्षाएं वस्तुतः यह जानने का माध्यम हैं कि आपने ज्ञान को कितना आत्मसात किया है, न कि कितना स्मरण किया है। वह आपके पाठ्यक्रम की समाप्ति का द्योतक नहीं है, बल्कि आपके आंतरिक विकास की एक महत्वपूर्ण घोषणा है।

इस समय प्रत्येक विद्यार्थी के मन में आशंका, तनाव व उम्मीदों का एक द्वंद्व चल रहा होगा। यह स्वाभाविक है। किसी भी महान प्रयास से पूर्व यह मानसिक उथल–पुथल अनिवार्य है, ठीक वैसे ही जैसे एक महान कलाकार मंच पर जाने से पहले बेचैन होता है। किंतु, एक विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है, हमारा लक्ष्य आपको जीवन के कठोर यथार्थों व चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है। ये परीक्षाएं उसी तैयारी का एक प्रथम और गंभीर चरण हैं।

यदि हम भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शुरुआती जीवन को देखें, तो उन्होंने वायु सेना में पायलट बनने का अपना सपना साकार करने के लिए अथक परिश्रम किया था। परंतु, अंतिम इंटरव्यू में वे नौवें स्थान पर रहे, जबकि केवल 8 उम्मीदवारों का चयन हुआ था। यह उनके जीवन की एक बड़ी असफलता थी। इस निराशा के क्षण को उन्होंने यात्रा का अंतिम पड़ाव नहीं माना। उन्होंने धर्म और आध्यात्मिकता के अध्ययन में सांत्वना खोजी, अपने संकल्प को और सुदृढ़ किया, और आगे चलकर एक महान वैज्ञानिक, शिक्षक और देश के राष्ट्रपति बने। उनकी कहानी हमें सिख. ाती है कि असफलताएं जीवन में केवल दिशा बदलने का संकेत होती हैं, न कि रुक जाने का।

आपके लिए भी, यह परीक्षा परिणाम मात्र एक संख्या नहीं है। यह आपके द्वारा की गई ईमानदारी, घंटों की तपस्या और अनुशासन का प्रमाण है। यदि कोई प्रश्नपत्र कठिन प्रतीत होता है, तो वह केवल आपके ज्ञान की गहराई को मापता है। इस चुनौती को स्वीकार करने और पार करने का साहस ही आपके चरित्र की पहचान है।

जब आप परीक्षा कक्ष में प्रवेश करते हैं, तो आपकी तैयारी महत्वपूर्ण होती है, लेकिन आपके मानसिक संतुलन का महत्व उससे कहीं अधिक है। इतिहास गवाह है कि कई बार, कमजोर तैयारी वाले दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ने भयभीत और विचलित प्रतिभाशाली व्यक्ति से बेहतर प्रदर्शन किया है। क्यों? क्योंकि उन्होंने दबाव को चुनौती के रूप में देखा, न कि असंभव बोझ के रूप में।

यह आवश्यक है कि आप अपनी मानसिक और शारीरिक ऊर्जा का संतुलन बनाए रखें। एक कुलगुरु के रूप में, मैं आपको दिनचर्या में नियमित विश्राम और पर्याप्त नींद के महत्व पर जोर देने के लिए कहूँगा। हमारा मस्तिष्क एक जटिल मशीन है, जिसे लगातार काम करने के लिए ईंधन और आराम दोनों की आवश्यकता होती है। यदि आप तनावग्रस्त और नींद से वंचित हैं, तो आपकी सर्वोत्तम तैयारी भी परीक्षा के समय साथ छोड़ सकती है।

यदि हम क्रिकेट के मैदान को देखें, तो एक खिलाड़ी अपनी तकनीक पर जितना काम करता है, उतना ही काम वह अपनी मानसिक दृढ़ता पर भी करता है। दबाव की स्थिति में, जैसे कि अंतिम ओवर में लक्ष्य का पीछा करना, केवल वही सफल होता है जिसका मनोबल और एकाग्रता अटूट होती है। आप भी, एक ज्ञान–योद्धा के रूप में, इस संतुलन को अपनाएं और परीक्षा कक्ष को दबाव नहीं, बल्कि अपने प्रदर्शन का मंच समझें।

हमारा विश्वविद्यालय परिवार आपके साथ खड़ा है। आप पूरी ईमानदारी, साहस और अटल मनोबल के साथ इस परीक्षा में बैठें। अपनी सर्वोत्तम क्षमता का प्रदर्शन करें और विश्वास रखें कि आपकी मेहनत और लगन कभी व्यर्थ नहीं जाएगी।

प्रो राजीव कुमार, कुलगुरु
जेसी बोस विश्वविद्यालय

वंदे मातरम की अमर गाथा, 150 वर्ष पूर्ण

***अंजलि गर्ग।** इस वर्ष 7 नवंबर 2025 को भारत अपने राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूरे होने का ऐतिहासिक अवसर मना रहा है। माँ, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ यह शब्द केवल एक स्तुति नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना, स्वाधीनता संग्राम और राष्ट्रीय भावनाओं की वह गूंज हैं, जो पीढ़ियों से हर भारतीय के हृदय में धड़कती रही है। 7 नवंबर 1875 को बंगदर्शन पत्रिका में पहली बार प्रकाशित यह गीत आज भी देशभक्ति, एकता और मातृभूमि के प्रति समर्पण का सबसे ताकतवर प्रतीक है। इस लेख में जानते हैं वंदे मातरम का ऐतिहासिक सफर....*

गीत से राष्ट्रीय पहचान तक का सफर:

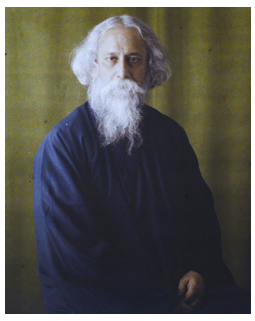

'वंदे मातरम' को बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने रचा और बाद में इसे अपने उपन्यास 'आनंदमठ' (1882) में शामिल किया। यह केवल कविता नहीं, बल्कि उस समय सामाजिक–राजनीतिक माहौल का जीवंत दस्तावेज था। एक ऐसा समय जब देश गुलामी की बेड़ियों से जूझ रहा था और जनमानस स्वतंत्रता के लिए आतुर था। रवींद्रनाथ टैगोर ने इस कविता को संगीतबद्ध किया, और देखते ही देखते यह गीत बंगाल से निकलकर पूरे भारत का प्रेरणास्रोत बन गया। इस गीत का महत्व केवल साहित्यिक नहीं है यह भारत के राष्ट्रीय आंदोलन की धड़कन बनकर उभरा। इसे सुनकर अनेकों क्रांतिकारियों ने जेल की राह चुनी, अनेक युवाओं ने अपने प्राणों की आहुति दी।

प्रतिरोध का गीत और ब्रिटिश दमन

1875 में प्रकाशित यह गीत धीरे–धीरे बंगाल के बौद्धिक और राजनीतिक जगत में फैलने लगा। श्री अरबिंदो ने 1907 में प्रकाशित अपने लेख में साफ लिखा कि बंकिम ने यह गीत 32 वर्ष पहले ही रचा था उस समय लोगों ने इसे अधिक ध्यान नहीं दिया, लेकिन समय आने पर यह गीत भारत की आत्मा को जगाने वाली शक्ति बन गया।

1905 के बंगाल विभाजन के समय ''वंदे मातरम'' जनता की जुबान पर था। इस गीत से उपजा जोश इतना प्रबल था कि अंग्रेज सत्ता इससे घबरा उठी। ब्रिटिश सरकार ने स्कूलों–कॉलेजों में इसे गाने पर प्रतिबंध लगा दिया। छात्रों को सजाएँ दी गईं, मान्यताएँ रद्द करने की धमकियाँ दी गईं, रैलियों में इसे गाने पर लोगों को पीटा गया। 1905 में रंगपुर के स्कूल के 200 छात्रों पर केवल इस गीत को गाने के लिए 5–5 रुपये का जुर्माना लगाया गया जो उस समय भारी दंड था। इसके बावजूद, ''वंदे मातरम'' की गूंज को कोई रोक न सका।

वंदे मातरम्

वंदे मातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्
सस्यशामलाम् मातरम्।।धृ.।।

शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्।।१।।

कोटिकोटि कंठ कलकल निनाद कराले
कोटिकोटि भुजैर्धृत–खर–करवाले
के बोले मा तुमि अबले
बहुबलधारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीम् मातरम्।।२।।

तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि हृदि, तुमि मर्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति, हृदये तुमि मा भक्ति
तोमारई प्रतिमा गडि मन्दिरे मन्दिरे मातरम्।।३।।

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी
नमामि त्वाम्, नमामि कमलाम्,
अमलाम्, अतुलाम्, सुजलाम्, सुफलाम्, मातरम्
श्यामलाम्, सरलाम्, सुस्मिताम्, भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम्, मातरम्।।४।।

– कै. बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय साहित्य से राष्ट्रवाद का शिल्प

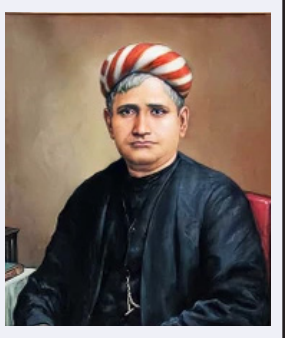

बंकिम चंद्र (1838–1894) बंगाल नवजागरण की प्रमुख हस्तियों में से एक थे। उन्होंने न केवल आधुनिक बंगाली गद्य को समृद्ध किया, बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद की वैचारिक नींव भी रखी।

उनकी रचनाएँ 'दुर्गेश नंदिनी', 'कपालकुंडला', 'देवी चौधरानी', और 'आनंदमठ' गुलाम समाज की सामाजिक व नैतिक चुनौतियों को उजागर करती हैं। लेकिन उनकी सबसे अमर देन ''वंदे मातरम'' है, जिसने मातृभूमि को माँ के रूप में देखने का नजरिया देश को दिया। यह दृष्टि आगे चलकर स्वाधीनता आंदोलन का निर्णायक आधार बनी। ''वंदे मातरम'' औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ जनता की आवाज बन गया।

150 साल एक गीत जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है

150 साल बाद भी इसकी ध्वनि में वही शक्ति है, वही स्पंदन है। समय बदल गया, पीढ़ियाँ बदल गईं, संचार के माध्यम बदल गए लेकिन ''वंदे मातरम'' की आत्मा आज भी उतनी ही जीवंत है। यह गीत हमें बताता है कि राष्ट्र केवल मानचित्र की रेखाओं का समूह नहीं, बल्कि भावनाओं, संस्कारों और संघर्षों से बनी एक जीवंत अवधारणा है। इसमें उस भारत की तस्वीर है जो अपनी प्रकृति, संस्कृति और विविधता को एक साथ समेटे खड़ा है। आज जब देश तकनीक, विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के नए दौर में प्रवेश कर चुका है, ऐसे समय में वंदे मातरम हमें हमारी जड़ों से जोड़ने का काम करता है। यह गीत याद दिलाता है कि आधुनिकता और प्रगति के बीच भी हमारी पहचान उसी मिट्टी से बनी है, जिसकी सुगंध को बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने शब्दों में ढाला था। यह गीत इतिहास का अंश नहीं भारत की आत्मा की धड़कन है।

मीडिया पोर्टफोलियो प्रदर्शनी 2025 में विभागाध्यक्ष प्रो पवन सिंह व फैकल्टी के साथ स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष के विद्यार्थी बेस्ट पोर्टफोलियो अवॉर्ड के साथ प्रसन्न मुद्रा में

प्रदर्शनी का शुभारंभ करते अखिलेश शर्मा

PORTFOLIO EXHIBITION 2025

हरियाणा मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार राजीव जेटली से बातचीत करती छात्रा अदिति

प्रदर्शनी में प्रतिभागी स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थी

प्रदर्शनी का अवलोकन करते डीएसडब्ल्यू डीन प्रो प्रदीप डीमरी एवं अन्य

प्रदर्शनी का अवलोकन करने पहुंचे 2000 से अधिक विद्यार्थी

प्रदर्शनी के विजेताओं को ट्रॉफी देकर किया सम्मानित

मीडिया पोर्टफोलियो 2025 प्रदर्शनी का अवलोकन करते अखिलेश शर्मा, राजीव जेटली, प्रो रवि के धर साथ में प्रो अतुल मिश्रा एवं अन्य

मीडिया पोर्टफोलियो 2025 प्रदर्शनी के उद्घाटन सत्र में उपस्थित अखिलेश शर्मा, राजीव जेटली के साथ प्रो कोमल भाटिया, प्रो अरविंद गुप्ता, प्रो मुनीष वशिष्ठ, प्रो प्रदीप डीमरी, प्रो रवि के धर, प्रो पवन सिंह, प्रो अतुल मिश्रा, सपना सूरी एवं अन्य

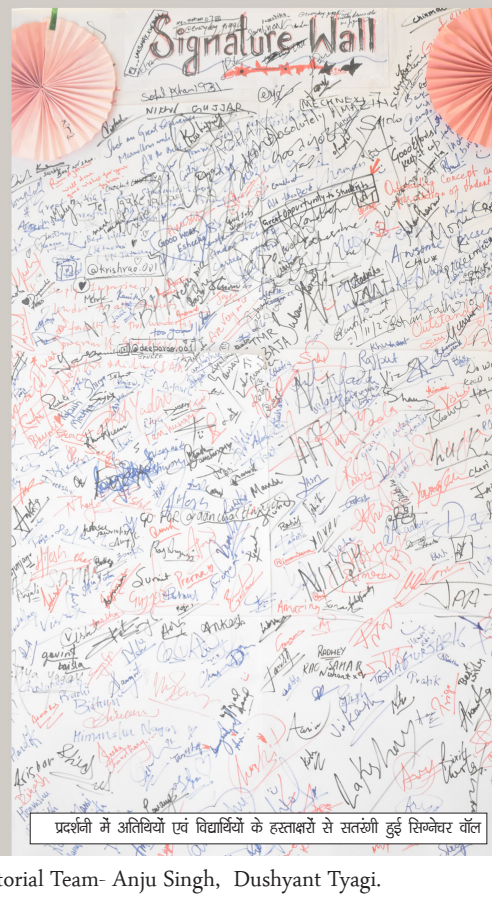

प्रदर्शनी में अतिथियों एवं विद्यार्थियों के हस्ताक्षरों से सतरंगी हुई सिग्नेचर वॉल

Developed by students of CMT for Practical Training Purpose. Patron- Prof. Rajive Kumar, Co-Patron Prof Anuradha Sharma, Prof. Pawan Singh. Editorial Team- Anju Singh, Dushyant Tyagi.
Student Fraternity- Anjali Garg Special Thanks: Jitender Singh Yadav (PRO, JCBUST)